प्रज्ञा–प्रवाह

पाठमाला एवं अभ्यास पुस्तिका

4

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

प्रज्ञा–प्रवाह

पाठमाला एवं अभ्यास पुस्तिका

4

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, लाजपतराय मार्ग, कुरुक्षेत्र – 136118

दूरभाष : 01744 – 259941 ई – मेल : vbukkkr@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं वितरक

Vidya Bharti Uttar Kshetra

Narayan Bhavan, Lajpat Rai Marg, Kurukshetra
Phone : 01744-259941
E-mail: vbukkkr@yahoo.co.in

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005
दूरभाष : 0191-2547953
E-mail: bssjmu2006@yahoo.com
bssjk08gmail.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

सर्वहितकारी केशव विद्या निकेतन, पठानकोट बाईपास, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू, नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009
दूरभाष : 0181-2421199, 2420876
E-mail: ses_jld@yahoo.co.in, ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति, शिमला

सरस्वती विद्या मन्दिर, हिम रश्मि परिसर, विकास नगर,
शिमला-171 009, दूरभाष : 0177-2624624, 2620814
E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in
himachalshikshasamitishimla@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,
लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)
दूरभाष : 01744-270241, 251156
E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,
लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)
दूरभाष : 01744-270241, 251156
E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051
दूरभाष : 011-22008542
E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी,
दिल्ली-110 031
दूरभाष : 011-22002957
E-mail: mahamantri_nyas@yahoo.co.in
hssn2604@gmail.com

समर्थ शिक्षा समिति

सरस्वती शिशु/बाल मन्दिर परिसर, आरामबाग,
डेसू कार्यालय के पास, पहाडगंज, नई दिल्ली-110055
दूरभाष : 011-23631216, 23631247
E-mail: samiti59@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2015

वैधानिक चेतावनी

यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

मुद्रक:

बुलबुल प्रिंटिंग प्रैस

प्लॉट नं॰ 1831 दीप कॉम्प्लेक्स हल्लो माजरा, चण्डीगढ़

दूरभाष: 09988338711 ई-मेल: bulbulpress@gmail.com

लेखक : सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती, हरियाणा

अनुक्रमणिका

पाठ	शीर्षक	जीवन मूल्य	पृष्ठ संख्या
1.	राष्ट्रार्चन (कविता)	देश भक्ति, राष्ट्रवंदन	6
2.	डॉ. अब्दुल कलाम	वैज्ञानिकता एवं देश भक्ति	10
3.	एक थी नीरजा	साहस, समर्पण	15
4.	डॉ. सी. वी. रमन	वैज्ञानिकता एवं देश भक्ति	19
5.	श्रवण कुमार	पितृ भक्ति, आज्ञाकारिता	23
6.	सरदार बल्लभ भाई पटेल	देश भक्ति	29
7.	सत्यवादी–राजा हरिश्चन्द्र	सत्यवादिता	34
8.	बुद्धिमति पंडिताइन	बुद्धिचातुर्य एवं समरसता	39
9.	क्रोध एवं संयम	संयम	43
10.	मेरा नया बचपन (कविता)	बचपन का मूल्य	47
11.	मैट्रो रेल (आधुनिक जन परिवहन)	वैज्ञानिकता एवं देश भक्ति	52
12.	वीर सावरकर	देश भक्ति	57
13.	भामाशाह का त्याग	त्याग	62
14.	धोखेबाज़ सारस	सावधानी, समझकर विश्वास करना	67
15.	संचलन गीत (कविता)	साहस	72
16.	लाला लाजपत राय	देश भक्ति	76
17.	ऊधम सिंह का बलिदान	बलिदान	81
18.	डॉ. मार्क (कैंसर विशेषज्ञ)	आस्था और विश्वास	86
19.	खड़ा हिमालय बता रहा है (कविता)	धैर्य	91
20.	वीर अब्दुल हमीद	देश भक्ति, साहस	94
21.	विष्णु गणेश पिंगले	ईश्वर भक्ति	99
22.	सूरदास के पद	मातृभूमि सम्मान	104
	आधार प्रश्न पत्र	.....	108

आलोक : प्रत्येक पाठ में एक से अधिक जीवन मूल्य हैं । आचार्य / दीदी उन जीवन मूल्यों से सम्बन्धित जानकारी दें। गतिविधियाँ (Activities) कराएँ।

संदेश

प्रज्ञा–प्रवाह नामक यह पाठ्य–पुस्तक कक्षा चतुर्थ के लिये श्री संतोष कुमार त्रिवेदी द्वारा संकलित की गई है। पुस्तक सरल एवं सुबोध है, प्रत्येक पाठ जीवन मूल्यों का प्रतिपादन करता दिखाई देता है। व्यक्तित्व विकास के सभी पहलुओं को स्पर्श किया गया है।

आचार्यों तथा अभिभावकों के सुझावों के आधार पर इसका द्वितीय संशोधित संस्करण आपके हाथों में सौंपते हुए मैं हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ।

मेरा मानना है कि सुधार की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। अतः इस पुस्तक को पूर्णता की ओर बढ़ाने हेतु अपने अमूल्य सुझाव भेजने में संकोच न करें। निश्चय ही प्रत्येक संस्करण अपने पिछले संस्करण से अधिक उपयोगी होगा।

रत्नचन्द सरदाना

प्रकाशन प्रमुख

विद्या भारती, उत्तर क्षेत्र

कुरुक्षेत्र

प्रस्तावना

इस पुस्तक के अध्ययन से भैया/बहनें स्वतन्त्र चिन्तन द्वारा भाषा सीखने और समझने में तथा नैसर्गिक क्षमताओं का रचनात्मक प्रयोग करने में सक्षम होंगे। पाठ्य वस्तु परीक्षा आधारित न होकर मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T) के मानकों के अनुरूप बनकर भाषा के चारों कौशलों (श्रवण, वाचन, पठन एवं लेखन) में अभिवृद्धि करने वाली सिद्ध हो ऐसा प्रयास है।

कल्पना शक्ति एवं सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से भाषा सरल, सहज, स्पष्ट एवं सुबोध बने इसका ध्यान रखा गया है। अध्ययन-अध्यापन में अभिरुचि के जागरण हेतु चित्रों की साज-सज्जा तथा भैया/बहिनों की आयु एवं ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखते हुए - कविताएँ, कहानी, गीत, लेख एवं संस्मरण इत्यादि का चयन किया गया है।

समय के साथ रुचियों/अभिरुचियों का परिवर्तन, परिवर्धन अवश्यम्भावी है परन्तु जीवन मूल्यों का आधार ही शिक्षा को सोद्देश्य गतिमान करने में सक्षम हुआ है। शिक्षण सूत्रों-'सरल से कठिन की ओर' 'ज्ञात से अज्ञात की ओर' 'निश्चित से अनिश्चित की ओर' तथा शिक्षण युक्तियाँ-व्याख्या, कहानी, प्रश्नोत्तर, सहगान आदि के आधार पर पाठ्य सामग्री का चयन किया गया है।

सभी पाठों में अभ्यास कार्य के अन्तर्गत शिक्षणेतर गतिविधियों को विशेष स्थान देकर-सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (C.C.E पैटर्न) के मानकों को भी दृष्टिगत् किया गया है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करेगी। आप सभी के बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से मैं उनका स्वागत करूँगा।

जिन ज्ञात-अज्ञात लेखकों, कवियों की रचनाओं का समावेश पुस्तक में किया गया है उन सबके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

सन्तोष कुमार त्रिवेदी
एम.ए. (राज.शास्त्र, हिन्दी) बी.एड.
शैक्षिक प्रमुख, विद्या भारती, हरियाणा

राष्ट्रार्चन

पाठ 1

गाता हूँ मैं तेरा गान।
हे प्रिय भारत देश महान।।

गृह, मन्दिर, गिरि, वन सब तेरे,
क्या ही मन भाते अति मेरे,
महामधुर है तेरा नाम,
हे प्रिय भारत देश महान।। 1 ।।

उत्तर हिमगिरि परम मनोहर,
गंगा-यमुना पावन निर्मल,
शांति और सुख के तुम धाम,
हे प्रिय भारत देश महान।। 2 ।।

-:अभ्यास के लिए:-

(1) शब्दार्थः-

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
गान	गीत	गृह	घर	पावन	पवित्र
निर्मल	स्वच्छ	धाम	पवित्र स्थान	गिरि	पर्वत
महामधुर	बहुत मीठा	परम मनोहर	अधिक सुन्दर	हिमगिरि	हिमालय

2. अधोलिखित वाक्यों में सही पर (✓) तथा गलत पर (✗) चिह्न लगाएँ।

क- "गाता हूँ मैं तेरा गान" का अर्थ क्या है ?

1. मैं तेरा गीत गाता हूँ। ☐
2. मैं राष्ट्रगान गाता हूँ। ☐

ख - हे प्रिय भारत देश महान! का क्या अर्थ है?

1. हे मेरे प्रिय महान भारत देश! ☐
2. हे मेरे प्रिय महानायक! ☐

3. प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. कवि किसका गीत गाता है?

.....

ख. कवि ने गृह, मन्दिर, वन किसके बताए हैं?

.....

ग. भारत देश को कवि ने क्या नाम दिया है?

.....

घ. उत्तर दिशा में क्या है?

.....

ङ. प्रिय देश को किसका धाम कहा है?

.....

4. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिए:-

गाता हूँ ..... गान । गृह ..... गिरि ..... सब तेरे ।
..... है तेरा ..... । उत्तर ..... परम ..... ।
गंगा ..... पावन ..... । शांति और ..... के
..... धाम, हे ..... भारत ..... महान ।।

5. भाव समझकर कविता की उन्हीं पंक्तियों को लिखिए।

क. हे मेरे प्रिय महान देश! मैं तेरे ही गीत गाता हूँ।

.....

ख. हे मेरे प्रिय महान देश! तेरा नाम बहुत मीठा है।

.....

ग. हे मेरे प्रिय महान देश! तुम्हीं शांति और सुख के पवित्र स्थान हो।

.....

6. नीचे लिखे शब्दों को उनसे संबन्धित शब्दों से मिलान कीजिए।

1.	तेरा	1.	मनोहर
2.	देश	2.	सुख
3.	महा	3.	यमुना
4.	उत्तर	4.	निर्मल
5.	पावन	5.	हिमगिरि
6.	गंगा	6.	मधुर
7.	शांति	7.	गान
8.	परम	8.	महान

7. अधोलिखित प्रश्नों के सही विकल्पों पर गोल घेरा बनाइए।

क. कवि किसका गान (गीत) गाता है?

सरस्वती का　　ताज महल का　　महान देश का

ख. कविता में कवि प्रिय देश को क्या नाम देता है?

महा मधुर　　महा क्रान्ति　　महा देश

ग. कवि ने उत्तर दिशा में किसका स्थान बताया है?

गंगा नदी　　महासागर　　हिमगिरि

घ. कवि, कविता में भारत को किन दो गुणों का धाम कहता है?

क्रांति और दु:ख　　शांति और सुख　　रात और दिन

ङ. पावन और निर्मल किसे कहा गया है?

गंगा–यमुना　　नदी–तालाब　　पेड़–पौधे

गतिविधि (Activity) :-

सभी को अपना देश/अपनी जन्मभूमि/कर्मभूमि प्रिय होती है। मन के अपने भाव गद्य या पद्य में लिखिए।